ISSN 2320-4907 IIS Univ.J.A. Vol.9 (2), 181-188 (2020)

भारतीय हिन्दी सिनेमा के केन्द्र में 'सबऑल्टर्न' पात्र और कथानक का विश्लेषण

महेश कुमार मिश्रा

सारांश

रंजीत गुहा की अगुवाई में कई विद्वानजनों ने इतिहास लेखन को संभ्रांतीय पूर्वाग्रह से ग्रस्त पाते हुए, इसके पुन: लेखनका कार्य इतिहास को नीचे से देखने (history from below) के दृष्टिकोण से अपनाया। जिसे सबाल्टर्न स्टडी कहा जाता है।1सबाल्टर्न की परिभाषा में लिंग, वर्ग, संस्कृति, भाषा, नस्ल,पद या अन्य दूसरे रूपमें 'आम जन' सम्मिलित किये गये हैं। 2 सिनेमा,समाज का प्रतिबिम्ब है और अपने करीब 125 साल के इतिहास समाज को ही अंगीकृत करते हुए, कहानियों को अस्तित्व में लाता रहा है। 3 इन कहानियों मेंमुख्यत: सबाल्टर्न आधारित नायक, नायिका, पात्र-चरित्र आदि को केन्द्र में रख कर कथानक का प्रस्तुतिकरण रहा है। भारतीय हिन्दी सिनेमा के केन्द्र में सबाल्टर्न पात्र और कथानक के साथ कई कहानियों का निर्माण किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय हिन्दी सिनेमा में सबाल्टर्न पात्र, कथानक का विश्लेषण कर अध्ययन किया गया है तथा इस शोध पत्र के माध्यम सेनये इतिहास लेखन की उभरी विचारधारा सबाल्टर्न और सिनेमा के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है।

संकेताक्षर : , एंग्रीयंग मैन; पूंजीवाद; राष्ट्रवाद; सबाल्टर्न स्टडी; समाज और सबाल्टर्न; हिन्दी सिनेमा.

सिनेमा मानवीय विचारों के कलात्मक प्रस्तुतिकरण का सशक्त माध्यम होने के साथ, जनमानस की भावनाओं को सक्रिय करने का भी उतना ही प्रभावी माध्यम है। भारत के मुम्बई शहर में भारतीय हिन्दी सिनेमा उद्योग बसा हुआ है। यहां निर्मित होने वाली फिल्में हिन्दुस्तान सहित दुनिया के कई देशों में देखी जाती हैं। सिनेमा की कहानियां जिनमें प्यार, देशभक्ति, परिवार, अपराध, भय, डर आदि के साथ व्यक्ति और समाज मुख्य विषय होते हैं। इतिहास के दस्तावेज के रूप में सिनेमा का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।

रंजीत गुहाको सबाल्टर्न स्टडी (निम्नवर्गीय प्रसंग) का जनक माना जाता है। 1980 के दशक में सबाल्टर्न स्टडी समूह का निर्माण हुआ। रंजीत गुहा संपादकीय से जुड़े कई खंडों को सबाल्टर्न स्टडी नाम दिया गया। 4 सबाल्टर्न स्टडी के पहले छ: खंडों का संपादन रंजीत गुहा ने किया और बाद के पांच खंडों का अन्य विद्वानजनों ने किया। सबाल्टर्न स्टडी की अवधारणा यह थी की भारतीय इतिहास-लेखन, संभ्रातीय पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। सबाल्टर्न स्टडी से जुड़े विद्वानों और इतिहासकारों का मानना है कि उन्होंने जनता के नजरिये से (विशेषत: सबाल्टर्न दृष्टिकोण से) इतिहास लिखा कर, इतिहास को सही दिशा दी है।

भारतीय संदर्भ में रंजीत गुहा ने अपनी पुस्तक *Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India* (औपनिवेशिक भारत में कृषक विद्रोह के मूल पहलू) में किसान-संघर्ष के 'स्वायत्त क्षेत्र' पर प्रकाश डाला है, जो संभ्रांत वर्ग से स्वतंत्र रहा है।5इटली के मार्क्सवादी और साम्यवादी नेताएन्टोनियो ग्रामी (1891-1937) ने अपनी रचना प्रिजन नोटबुक्स में सबाल्टर्न शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया, जो कि समाज के निम्नवर्गीय समूह के लिए होता था।6 ग्राम्शी के अनुसार निम्नवर्गीय समूहों का इतिहास हमेशा शासकीय समूह से जुड़ा होता है। उन्होंने ये भी माना कि ये इतिहास आमतौर पर खंड-खंडमें विभाजित भी होता है।रंजीत गुहा ने सबाल्टर्न स्टडी में सबाल्टर्न शब्दके संदर्भ में ग्राम्शी का जिक्र तो नहीं किया लेकिन उन्हें प्रेरणास्रोत अवश्य

माना। सबाल्टर्न स्टडी में सबाल्टर्न काप्रयोग दक्षिण एशियाई समाज के मातहत वर्ग के लिए कर रहे हैं जहां ये लिंग, वर्ग, संस्कृति, भाषा, नस्ल,पद या फिर दूसरे रूप में आता है।

(रंजीत गुहा) सबाल्टर्न स्टडी को दो चरणों में विभक्त किया गया है। पहले चरण में–

- निम्न वर्ग अर्थात शोषित वर्ग के सारोकार की बात कही गयी है।
- संभ्रांतों यानि शोषक वर्ग की आलोचना
- ग्राम्शी के चिंतन और मार्क्सवादी का प्रभाव और बृहद मार्क्सवादी सिद्धांत के भीतर काम करने का प्रयत्न।

दूसरे चरण में सरोकार बदले है वो हैं–

- इस चरण में पाठ विश्लेषण पर विशेष जोर दिया गया। अब केवल शोषित लोगों के इतिहास की खोज नहीं की जाती रही। इस चरण में संभ्रांत विमर्शों पर आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया।
- मिशेल फूको, एड्वर्ड सईड और अन्य उत्तर आधुनिकतावादियों तथा उत्तर उपनिवेशवादियों के पक्ष में मार्क्स और ग्राम्शी को दर–किनार कर दिया गया।7

सबाल्टर्न स्टडीज में संक्षिप्त में सिनेमा के इतिहास पर चर्चा करते हुए सबाल्टर्न विचारधारा को समझाया गया है। इतिहास को नये दृष्टिकोण से देखने का आरम्भ करने वाले सबाल्टर्न स्टडीज के विद्वानों जिसमें रंजीत गुहा, शाहिद अमीन, ज्ञानेंद्र पांडेय, ज्ञान प्रकाश, पार्थ चटर्जी, दीपेश चक्रवर्ती, गौतम भद्र, डेविड हर्डीमैन के सबाल्टर्न विमर्श के साथ भारतीय हिन्दी सिनेमा में सबाल्टर्न आधार और दृष्टिकोण पर भी अध्ययन किया गया है और कई लेखा लिखे गये हैं । उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन के अन्तर्गत कला मर्मज्ञों, समाज सुधारकों, साहित्यिक आलोचकों, राजनीतिक विश्लेषकों और अर्थशास्त्रियों के साथ कई अन्य विद्वानों ने साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

''उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन की सबसे नई शाखा के रूप में सबाल्टर्न (हाशिए) के अध्ययन से सम्बन्धित समूह है जिसका प्रवर्तन अस्सी के दशक में प्रतिष्ठित भारतीय विद्वानों द्वारा किया गया है।'' 8

हिन्दी सिनेमा में आरम्भ से ही सामाजिक मुद्दों पर बनी फिल्मों को वरियता दी गयी लेकिन सबाल्टर्न इतिहास लेखन में भी चर्चा करने के बावजूद सिनेमा को सम्मिलित नहीं किया गया है। 9 सबाल्टर्न स्टडीज की नयी विचारध ारा के बाद सिनेमा की व्यापकता को लेकर कई अन्य विद्वानों के द्वारा इतिहास लेखन में सिनेमा के योगदान को समाहित कर समय–समय पर महत्वपूर्ण लेखा और पुस्तकें लिखी गयी हैं। ऐसे में ऐतिहासिक अध्ययन में सिनेमा की नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पॉल स्मिथ द्वारा संपादित द हिस्ट्रोरियन एंड फिल्म पुस्तक में विलिम्यस हेग अपने लेखा में लिखते है:–

''इतिहासकारों के लिए, वास्तविकता को दर्ज करने की क्षमतारखने वाली फिल्म उपयोगी है लेकिन फिल्म माध्यम में वास्तविकता को विकृत करनेऔर घटनाओं की रिकार्डिंग में विसंगतियों के लिए भी समान क्षमता है। इतिहासकार जो फिल्म स्रोतों के साथ काम करेंगे, उन्हें यह जानना होगा कि फिल्म की संरचना कैसे होती हैं और वह संरचना आकार किसा प्रकार का अर्थ रखाती हैं। सिनेमाई भाषा के प्रत्येक घटक को कई तरीकों से और विभिन्न संयोजनों में एक दृश्य संदेश का उपयोग करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।''10

इतिहासकार फिल्म के माध्यम से विषयक अध्ययन में उपयोग कर सकते हैं क्योंकि फिल्म संरचना में कई कारकों का प्रयोग किया जाता है।

''इसके अलावा, फिल्म के माध्यम से कई महत्वपूर्ण संकेत और सामग्री भी प्रदान करती है। वास्तुशिल्प शैली, स्थल (वातावरण), तकनीकी विकास का स्तर, परिवहन के साधन, फैशन, फर्नीचर और अन्य सजावटी

सामान, प्लेकार्ड, प्रतीक, वर्दी, यहां तक कि भाषा और व्यवहार के पैटर्न भी, इतिहासकार के लिए उपयोगी संकेतक हैं जो कालानुक्रमिक या भौगोलिक रूप से अपने फुटेज को रखने की कोशिश कर रहा है।''11

सिनेमा वह मोर है जोकि जंगल में नाच ही नहीं सकता क्योंकि दर्शकों के बिना उसका कोई वजूद नहीं है। इसलिए आम आदमी से उसका (सिनेमा) सीधा सम्बन्ध है। 12 हिन्दी सिनेमाकी पहुंच अति विस्तृत है और यह अपने क्षेत्र में साक्षर और निरक्षर दोनों को ही समेटे हुएरखता है। सिनेमा के प्रमुख विषयों में कई क्षेत्र सम्मिलित होते हैं जिसमें सबाल्टर्न स्टडीज भी एक है।

''भारतीय फिल्मों में मुख्यत: चयनित विषयों के रूप में है– फिल्म पॉलिसी, सरकार द्वारा नियंत्रित फिल्म निर्माण, सेन्सरशीप, नयी धारा का भारतीय सिनेमा, 1970 के दशक की इमरजेंसी और एंग्रीयंगमैन, भारतीय आधुनिकतावाद, उत्तर औपनिवेशिक सिद्धात (राष्ट्रवाद और पहचान), राजनीति, आर्थिकी, भारत–पाकिस्. तान का विभाजन(आतंकवाद) और सबाल्टर्न स्टडीज (नागरिकता और राष्ट्रवादी इतिहासकार)।''13

भारतीय इतिहास को धरोहर के रूप में सहजने में भारतीय हिन्दी सिनेमा का विशेष योगदान रहा है। जनसंचार के श्रेष्ठ माध्यम सिनेमा से लोगों को इतिहास की जानकारी तो मिली है वहीं इसकार्य क्षेत्र से जुड़े (निर्देशक, निर्माता, लेखक, कलाकार आदि) लोगों ने भी समाज के निम्नवर्गों से जुड़ी हुई कहानियों के माध्यम से सबाल्टर्न का प्रतिनिधित्व किया है।

सबाल्टर्न स्टडी के हिन्दी अनुवाद निम्नवर्गीय प्रसंग–भाग 2 के 'पक्की से हट कर' शीर्षक लेख में शाहिद अमीन और ज्ञानेंद्र पांडेय ने कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया है, जिसमें सबसे प्रमुख है कि सर्व–विदित घटनाओं को कैसे नए सिरे से उठाया जाय, आंका जाए, पढ़ा जाए या फिर प्रस्तुत किया जाय? इसमें विभाजन पर सवाल उठते हुए कहा गया है कि आखिर हिन्दुस्तान के विभाजन का इतिहास अभी तक क्यों नहीं लिख पाया गया है? जबकि मंटो, राजिन्दर सिंह बेदी, राही मासूम रजा, क़ुर्रतुल ऐन हैदर और कृष्णा सोबती ने कई कृतियों को जन्म दिया है वहीं दूसरी ओर महान फिल्मकार ऋत्विक घटक और एम.एस.सथ्यू ने विभाजन को दर्शाया है। 14 सिनेमा की विशालता को देखते हुए सबाल्टर्न स्टडी में नये इतिहास क्रम की विचारधारा के लिए इस सशक्त माध्यम पर विचार किया गया है।

वहीं रंजीत गुहा ने हरिहर वैष्णव को दिये साक्षात्कार में खुद भी स्वीकार किया है कि एकदम गरीब औरत ('झी' यानि दासी) दिखायी देती है सत्यजीत रे की फिल्म में, पारितोश सेन की स्क्रिप्ट में, प्रभाष सेन, शंखो चौधरी की मूर्तिकला में। 15

रंजीत गुहा ने भारतीय इतिहास लेखन पर संभ्रांत वर्ग आधिपत्य का प्रभाव माना और उनके द्वारा दिये गये ही जन और सबाल्टर्न को समानार्थी के रूप में उपयोग में लाया गया।16 इसके पहले डेरिडा ने प्रमुख समूह के निध र्ारण को एंट्रे (1981) में वर्णित किया है, जिसमें प्रमुख विदेशी समूह तथा अखिल भारतीय स्तर पर प्रमुख स्वेदशी समूह को संभ्रांत वर्ग की श्रेणी में दर्शाया गया है तो वहीं, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर प्रमुख स्वदेशी समूह तथा जन और सबाल्टर्न वर्ग समानार्थी के रूप में उपयोग किया जाता है।कुल भारतीय आबादी और उन सभी के बीच अंतर जिसे हम संभ्रात के रूप में वर्णीत करते हैं,सबाल्टर्न प्रतिनिधित्वहै। 'जन'और सबाल्टर्न को एक–दूसरे के रूप में भी प्रयोग किया गया है। 17

सबाल्टर्न स्टडी में आम जनता– गरीब किसान, चरवाहा, कामगार, दलित, जाति व्यवस्था, स्त्री समाज आदि की उदारावस्था तक ही सीमित न रहकर उनके विचार, उनकी सोच तक पहुंचने का प्रयास किया गया है।18

सिनेमा के केन्द्र कथानकों में हमेशा से 'सबाल्टर्न' आधारित वरियता दिखती है। सबाल्टर्न और भारतीय हिन्दी सिनेमा का जुड़ाव पुराना रहा है। इतिहास को पुन: लिखने के क्रम में सबाल्टर्न और सिनेमा में सम्बन्ध होते हुए भी, विद्वानजनों द्वारा सिनेमा को सबाल्टर्न स्टडी में सम्मिलित नहीं किया जाना, इतिहास को ही पूर्ण नहीं बनाता है।भारतीय सिनेमा का इतिहास 1913 में धुंडिराज गोविंद फाल्के उपाख्य दादा साहब फाल्के की फिल्म राजा

हरिशचंद्र से शुरू होता है (जो कि स्वतंत्रता पूर्ववर्ती है)। विश्व की पहले चल–चित्र को सन् 1895 (लगभग 125 साल पहले) में फ्रांस के निर्देशक लुईस ल्यूमरे ने बनाया। 46 सेकेंण्ड के श्याम श्वेत चल–चित्र La Sortie de l'Usine Lumière à Lyon को कैमरे में कैद कर इतिहास का हिस्सा बनाया है। 19इस चलचित्र में भी समाज के 'कामगार वर्ग' को ही दर्शाया गया है जो कि विश्व पटल पर सिनेमायी इतिहास लेखन का आरम्भ है और जिसकी प्रासंगिकतावर्तमान में भी विद्यमान है।

लिंग भेद, वर्ग भेद का उदाहरण भारतीय इतिहास से इस तरह जुड़ा है कि पहली फिल्म राजा हरिशचंद्र (1913) के लिए किसी महिला ने नायिका के किरदार के लिए हां नहीं की थी जिसकी वजह से एक पुरुष रसोइया सालुंके को महिला किरदार करना पड़ा जबकिउस समय के दर्शक वर्ग ने उत्साहपूर्वक इस सिनेमा को स्वीकारा भी। 20 सामाजिक व्यवस्था और महिलाओं के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण लगान (2001) की फिल्म में भी दिखायी देता है गौरी को क्रिकेट मैच खेलने से सिर्फ इसीलिए हामी नहीं दी जाती क्योंकि वो एक महिला है।21 सामाजिक व्यवस्था और महिलाओं की स्थिति सदैव से सिनेमा से जुड़ी रही है। राजा हरिशचंद्र फिल्म के बाद महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी सिनेमा में बढ़ा। भारत के सिनेमाई इतिहास को शुरू करने और सिनेमा की वजह से सामाजिक परिवर्तन, नयी चेतना के प्रारम्भ और लिंग, जाति, धर्म आदि के आधार पर बंटे समाज को दर्पण दिखाने के युग की शुरूआत सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के ने कर दी थी।

सिनेमा के प्रारम्भिक दौर से ही सबाल्टर्न को प्रतिनिधित्व दिया गया और ब्रिटिश राज में सामाजिक बुराइयों को लोगों तक पहुंचाया गया। राष्ट्रवाद के विचारों को लोगों तक रोकने के लिए ब्रिटिश हुकूमत ने ऐसी कई फिल्मों के बैन कर दिया था जिससे उन्हें कृषक वर्ग के लोगों का जमींदारों से विद्रोह होता हुआ दिखाई दिया। मूक फिल्म भक्त विदुर (1921) पहली ऐसी फिल्म थी जिसे बैन किया गया। 22 वहीं तेलगू फिल्म रायथू बीड्ढा (1938) भी बैन के वजह से प्रदर्शित नहीं हो पायी थी। 23राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने वाली विदुर फिल्म में नायक को महात्मा गांधी की तरह कपड़े पहने दिखाया गया था।

आजादी मिलने के बाद को व्यवस्था क्रम में और भी अलग बदलाव आया और नेहरू विचारधारा को थोपते हुए समाज को बदलने का क्रम शुरू हो गया। सबाल्टर्न और उच्च वर्ग में खाई और गहरी होने लगी। पूंजीवादी (बंच. पजंसपेज)और व्यापारवादी (प्दकनेजतपंसपेज) को समाज बदलने के लिए पूरी तरह से छूट मिलती दिखी। उस दौर में साहित्यिक परिवर्तन के साथ विश्व पटल पर हो रहे बदलाव भी साफ तौर पर दिखे। पिछड़े हुए, उप. नगरीयऔर हाशिये पर रहने वाला मुख्य किरदार (च्तवजंहवदपेज) अपनी विचार को प्रधानता देते हुए बदलते समाज के बदलाव को दिखाता है। बिमल रॉय की दो बीघा जमीन– (1953) इसका सशक्त उदाहरण है।24

इटली की नयी–यथार्थवाद धारा का असर भारत सहित पूरे विश्व पर पड़ा और इसका सीधा प्रभाव सिनेमा, चित्रकारी, साहित्य, संगीत और दूसरी ललित कलाओंमें दिखा। इतिहासकारों द्वारा 1940 से 1960 तक सिनेमा का स्वर्णकाल कहा जाता है। भारत में नयी धारा की शुरूआत हो गयी थी और सिनेमा में सामाजिक यथार्थवाद प्रभावी होना शुरू हो गया था। 25 उदाहरण– धरती के लाल (1946), नीचा नगर (1946), दो बीघा जमीन (1953)आदि।

आजादी के बाद सिनेमा में सबाल्टर्न प्रतिनिधित्व भी बदला और साथ ही राष्ट्रवाद की परिभाषा के अर्थ भी बदलने लगे। सिनेमा का निर्माण एक व्यवसाय के रूप में शुरू तो जरूर हुआ लेकिन एक कला के रूप में विकसित होकर अपनी बात को जनमानस तक प्रभावशाली तरीके से पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम बन कर पूरे विश्व को प्रभावित कर चुका था।

दो बीघा जमीन में आजादी के बाद आये सामाजिक–आर्थिक बदलाव और कृषक जो कि एक प्रवासी मजदूर बन चुका है, को प्रमुख किरदार के रूप में प्रस्तुत किया गया तथा नये यथार्थवाद को अपनाते हुए प्रभावशाली तरीके से कहानी कही गयी।

भारत में शुरू हुए नयी धारा जिसे समानान्तर सिनेमा कहा गया उसके प्रमुख के रूप में सत्यजीत रे की फिल्मों का विश्लेषण जरूर करना होगा क्योंकि उन्होंने समाज के सबाल्टर्नकी दशा को यथार्थपूर्ण तरीके से अपनी फिल्म पाथेर पंचाली (1953) में दिखाया, जो भारत ही नहीं विश्व के सिनेमा पटल पर एक ऐतिहासिक कृति मानी जाती है। महान फिल्म निर्देशक गुरूदत्त ने प्यासा (1957) के माध्यम से ने केवल अभिजातवर्ग द्वारा निम्न वर्ग के शोषण की बात कहानी के माध्यम से कही बल्कि फिल्म के गीत द्वारा उत्तर–उपनिवेशवाद की कारगुजारियों पर भी बेमिसाल टिप्पणी करते हुए राष्ट्रवाद के विषय पर जनमानस के हृदय पर चोट करने की कोशिष की। राजकपूर द्वारा निर्देशित अवारा (1951) और श्री420 (1955) फिल्म में सामाजिक सारोकार बात करते हुए पूंजीवादियों और व्यापारवाद पर कहानी कही है। फिल्म में मुख्य किरदार सबाल्टर्न है जिसके माध्यम से आजादी के बाद के बदलते पहलुओं के साथ लोभ, लालच, भेदभाव और राष्ट्रवाद की बदलती परिभाषा को दिखाया गया है। फिल्म के गीतों के माध्यम से भी वर्ग विभेद की बात को भी पेश किया गया है।

रंजीत गुहा द्वारा संपादित *A Subaltern Studies Reader* 1986–1995 पुस्तक में उन्होंने माना है कि (1970 के दशक में) नक्सबाड़ी उत्थान और आपातकाल के अस्त के बीच के दौर एक निराशा (मोहभंग) की समयावधि थी, जिसका एक परिणाम सबाल्टर्न स्टडी (निम्नवर्गीय प्रसंग) है। 26

मार्क कॉसिन द्वारा निर्देशित *The Story of Film: An Odyssey* डाक्यूमेंट्री में जावेद अख्तर ने इसी बात को सिनेमा से जोड़ते हुए कहा है कि आजादी मिले हुए 25 साल हो गये थे और ये दौर एक तरह के आघात से आगे बढ़ रहा था। आजादी के बाद लोगों की सोच बदल रही थी। स्वतंत्रता, संविधान निर्माण, पंथ निरपेक्षिता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सब मिल चुकी था और लोगों को लग रहा थी कि समृद्धि तो अब मिल ही जायेगी लेकिन 1970 के दशक तक पहुंचते–पहुंचते लोगों को ऐसा लग चुका था कि कुछ नहीं हो रहा है। ऐसे समय में सभी तरह के आदर्श (प्कमंसपेउ) हिलने लगे और इसका सीधा असर कला पर भी पड़ा। उस दौर की कविताओं, कहानियों, उपन्यास, रंगमच और सिनेमा में भी ये असर देखने को मिला।27

जहां एक ओर बड़े–बड़े बजट की फिल्में बन रहीं थी वहीं छोटे बजट की फिल्मों के साथ श्याम बेनेगल, गोविन्द निहलानी, ओमपुरी, नसीरूद्दीन शाह, गिरीश कर्नाड, कुनंद शाह जैसे कई कलाकार सिनेमा में कमाल कर रहे थे। इसमें अंकुर (1974), निशांत (1975), मंथन(1976), आक्रोश(980), जाने भी दो यारो(1983) आदि कई बेमिसाल फिल्में हैं।

इसी दौर में देश में हो रहे बदलावों को भी सिनेमा ने अपने में संजोया, जो कि हमें एंग्रीयंग मैन के रूप अमिताभ बच्चन जैसे सदी के महानायक मिले जो उस समय के लोगों की बात को प्रभावशाली तरीके से लोगों तक ही पहुंचा रहे थे। सबाल्टर्न किरदार के रूप में उनकी विश्वनीयता और एंग्रीयंग मैन की छवि लोगों के दिलों पर आज भी छाप छोड़े हुए है। 28एंग्रीयंग मैन की संज्ञा से सदी के महानायक अमिताभ बच्चन को जाना जाता है।29 अमिताभ अपने साक्षात्कार कहते हैं कि उस दौर में लोगों ने एक उभरते हुए एंग्री यंगमैन के किरदार को देखा जो एक अकेला सिपाही है, जो अपने आप में विश्वास रखता है कि वो किसी भी हालात में अपने आप की देखभाल करने में सक्षम है। ऐसा विश्वास हर किसी औसत व्यक्ति में पैदा हो जाता है जब उसका किसी संस्था के प्रति अविश्वास पैदा हो जाता है।एंग्री यंगमैन का किरदार लोगों को पसन्द आया क्योंकि उसने संस्था और झूठे आदर्शो के खिलाफ आवाज बुलंद किया और वो लोगों का हीरो बन गया। उस दौर के हर औसत आदमी के बात सिनेमा के माध्यम से कही गयी।30

जेनेसिस (1986), मृगया (1976), खंडहर (1984) जैसी फिल्मों के माध्यम से मृणाल सेन ने सिनेमा के माध्यम से ऐसे विषयों को उकरने की कोशिश की जिन्हें आमतौर पर दर्शक कहीं और नहीं देखते हैं। तपन सिन्हा की फिल्म 'एक डॉक्टर की मौत'(1990), जिसमें समाज में व्याप्त अव्यवस्था और नवीन शोध के लिए लचीला रव्वैय्या कैसे किसी के मेहनत को मिट्टी बना देता है, पर आधारित है। पंकज कपूर का शानदार अभिनय इस फिल्म को और भी बड़ा बना देता है।

मदर इंड्या (1957) जो कि,औरत (1940) की फिल्म का रीमेक थी, में सबाल्टर्न (महिला प्रतिनिधित्व) दिखायी देता है और वर्ग विभेद को ये फिल्म सही मायनों में दर्शाती है। गंगा–जमुना (1961) में संस्था के विरूद्ध एक व्यक्ति के डकैत बनने की कहानी, आजादी के बाद बेरोजगारी के हालात और लोगों की बदलती सोच दर्शाया गया है। ये फिल्म भी सबाल्टर्न प्रतिनिधित्व की अगुवायी करती है।

जावेद अख्तर ने भी सिनेमा और बदलते समाज का प्रभाव खुद पर भी माना और उन्होंने मदर इंड्या के बिरजू के किरदारको पहला 'एंग्रीयंग मैन' माना है। उन्होंने ये भी माना है कि वो बिरजू के किरदार को देखकर इतने प्रभावित हुए थे कि जब उन्होंने एंग्री यंगमैन (जंजीर 1973, दीवार, 1975) का किरदार गढ़ा तो उसकी प्रेरणा भी मदर इंड्या का बिरजू ही था जो कि व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाता है। वो व्यवस्था को बदलना चाहता है।31 बिरजू और एंग्रीयंग मैन अपने दौर में संस्था द्वारा प्रताड़ित आम आदमी का प्रतिनिधित्व कर रहें हैं। उनको संस्था के द्वारा हाशिये पर पहुंचा दिया जाता है इसीलिए उनकी लड़ाई भी संस्था से ही होती है। इसी क्रम में सलीम–जावेद द्वारा लिखी गयी मील का पत्थर कही जाने वाली फिल्म, शोले (1975) सबाल्टर्न संदर्भ में एक कामयाब उदाहरण है क्योंकि संस्था के विरूद्ध सबाल्टर्न की बात ही कामयाबी से कही गयी है। नक्सलबाड़ी के दौर में संस्था के विरूद्ध डाकू जो कि पहले हीरो बना फिर वही खलनायक के रूप में दिखाया जाने लगा। इसके पीछे समाज के बदलते हालात रहें हैं।

सत्यजीत रे की फिल्मों से प्रभावित श्याम बेनेगल और गोविन्द निहलानी ने भारतीय हिन्दी सिनेमा में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए अपनी फिल्मों में सबाल्टर्न का प्रतिनिधित्व किया है। जिनमें अंकुर (1974) के माध्यम से जाति व्यवस्था के साथ धनवान और गरीब मजदूर–किसान के मध्य होने वाले क्रूर पहलू को दर्शाया गया और अंत में एक जमींदार की शीशे की खिड़की पर पत्थर मारते हुए एक किशोर को दर्शाया गया जो कि सिनेमा प्रतीकों और अलंकार में बदलते समय को परिभाषित करने की बात कहता है वहीं निशांत (1975) में जमींदारी शोषण के बीच सशक्त होते वर्ग आंदोलन को प्रदर्शित किया गया है। 32 फिल्म में चरित्रहीन जमींदारों द्वारा गांववालों के शोषण के बीच एक स्कूल अध्यापक की पत्नी के साथ अपहरण और बलात्कार की घटना उन्हें उद्वेलित कर देती है और वो खुद ही व्यवस्था बदलने के क्रम में उन सभी जमींदारों की हत्या अंजाम दे देते हैं। शोषक और शोषित वर्ग के बीच होने वाले संघर्ष को निशांत सार्थक प्रस्तुति करती है। इसी क्रम में आक्रोश फिल्म में किसान की पीड़ा दिखाने के साथ, अर्धसत्य (1983) में व्यवस्था के बीच ही एक व्यक्ति और संस्था के मध्य उभरे संघर्ष की कहानी दर्शायी गयी है।सत्यजीत रे की फिल्म सद्गति (1981) में जाति व्यवस्था का कथानक प्रस्तुत किया है जिसमें यह दर्शाया गया है कि किस तरह समाज में पनप रही जाति व्यवस्था का क्रम एक गरीब मजदूर के जीवन को समाप्त कर देती है। फिल्म में मजदूर की मृत्यु के उपरान्त दर्शायी गयी वास्तविक नाटकीयता जिसमें शव को हटाने में देरी फिल्म को यर्थाथ के निकट ले जाती है। गांव के वातावरण में बनी फिल्म सद्गति जाति व्यवस्था और छुआ–छूत पर चोट करती है।

इसके अलावा मिस्टर इंड्या (1987) फिल्म जो कि आम आदमी को एक विज्ञान के यंत्र की वजह से शक्ति मिलने और उसके बाद व्यवस्था बदलने के संघर्ष को दर्शाती है।इसी फिल्म का रीमेक एम जी आर की मृत्यु के बाद तमिल फिल्म राथीन राथामे (1989) में बनायी गयी, जो कि सबाल्टर्न वाच्य का प्रतिनिधित्व करती है। 33बदलते समय से बीच मिस्टर इंड्या में व्यक्ति और व्यवस्था के बीच बढ़ती खाई को दर्शाया गया है। जो कि कहीं न कहीं आम आदमी की ही बात करता है। मुगाम्बो (सांकेतिक रूप में) अव्यवस्था के बीच पैदा हुई एक शक्ति है जो कि देश निर्माण को ही खत्म करना चाहती है। फिल्म के अंत में नायक आम आदमी के रूप में ही मुगाम्बो का अंत करता है।

सिनेमा संचार का ऐसा सशक्त माध्यम जो कि समाज के सच को अपने में समेटे रहता है। 34 जनसंचार के इस सशक्त माध्यम से समाज के पहलूओं को समावेशित कर इतिहास लेखन में नये दृष्टिकोण को रखने के साथ तथा अन्य विचारों को सम्मिलित करते हुए बदलते परिवेश को भी दर्शाता रहा है। शंतरज के खिलाड़ी (1977) में इतिहास को रचा गया है तो गांधी (1982) के माध्यम राष्ट्रीय आंदोलन, राजनैतिक परिवेश के बीच बंटवारे

को दर्शाया गया है। इसी बंटवारे को आगे बढ़ाते हुए सबाल्टर्न दृष्टिकोण से धर्मपुत्र (1961), गर्महवा (1973), मम्मो (1994), ट्रेन टू पाकिस्तान (1998), 1947–अर्थ (1998), पिंजर (2003)की कहानियों से आम जनता के दुख दर्द को दर्शाया।

सबाल्टर्न स्टडीज में महिलाओं की अनुपस्थिति होने पर उसकी आलोचना गायत्री स्पीवॉक, पार्थ चटर्जी और अन्य कई विद्वानों ने लगातार की है। पुरातन सामाजिक व्यवस्था में पितृसत्तात्मक प्रभाव होने के विपरीत मि. हलाओं ने सशक्त भागीदारी सिनेमा में प्रस्तुत की है। इतिहास लेखन में पितृसत्ता का ही असर है कि नारी के इतिहास लेखन पर सबाल्टर्न विचारधारा के विद्वानों ने प्रश्न अवश्य खड़े किये हैं। सिनेमा में , सबाल्टर्न के रूप में उनकी वाच्य (आवाज) को भूमिका (1977), रुक्मावती की हवेली (1991), बैंडिट क्वीन (1994), फायर (1996), क्वीन (2014), पार्च्ड (2015) और पिंक (2016) आदि फिल्मों के माध्यम से सशक्तता पूर्ण ढंग से किया गया है।

भारतीय हिन्दी सिनेमा समाज का प्रतिनिधित्व करता है।सबाल्टर्न को लेकर पाश्चात्य साहित्यिक संदर्भ में काफी चर्चा होती रही है और ये साबित करने की कोशिश की गयी है कि सबाल्टर्न को सामान्यत: इतिहास में प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है। सबाल्टर्न के विचार, उनका जीवन स्तर, उनकी जीवन पद्धति, उनकी संस्कृति, समाज के उच्च वर्गों से निम्न स्तर की मानी गयी है।भारतीय हिन्दी सिनेमा में सबाल्टर्न प्रतिनिधित्व को दर्शाया जाता रहा है। अन्य ललितकलाओं के रूप में सिनेमा भी 'नये' इतिहास के रूप में सम्मिलित है और सबाल्टर्न को केन्द्र में रख कर ही सिनेमा को पूर्ण कर रहा है। स्वतंत्रता पश्चात राष्ट्रवाद की बदलती परिभाषा,जन और सबाल्टर्न में एकरूपता के बीच सिनेमा का सशक्त माध्यम न केवल सबाल्टर्न प्रतिनिधित्व देता रहा है बल्कि भविष्य में भी सबाल्टर्न आधारित पात्रों और कथनक को केन्द्रित करते हुए उन्हें दर्शाता रहेगा।

संदर्भ सूची

अमीन शाहिद, पांडेय ज्ञानेंद्र, निम्नवर्गीय प्रसंग–1, राजकमल प्रकाशन,2016 प्रस्तावना, पृ –xviii, 7–8

एल. हबीब लुआई: हाशिए की अवधारणा का अवलोकरन– ग्राम्शी से स्पिवॉक तक: ऐतिहासिकता और नये आयाम, वागर्थ, भारतीय भाषा परिषद, जुलाई–2016, पेज–9

स्मिथ, पॉल, द हिस्टोरियन एंड फिल्म, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 2008, पृ –49 एवं 51

जाधव रविन्द्र, मोरे केशव, मीडिया और हिन्दी, बदली प्रवृत्तियां, जेनेरिक, 2011, पृ–235

मासूम रजा, राही, ''सिनेमा और संस्कृति'', वाणी प्रकाशन, 2001, पृ–26

राव, डॉ सी भास्कर, फिल्म और फिल्मकार, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स 2010, पृ–170

राग पंकज, धुनों की यात्रा, राजकमल प्रकाशन, 2007,पृ–730

Cousins, Mark. (Producer, Writer & Director) *The Story of Film:An Odyssey,* 2011. Ep. 11.

Elison, William et al. Novetzke Christian, RotmanLee Andy, *Amar Akbar Anthony: Bollywood, Brotherhood and the Nation,* Harvard UP, 2016. p. 121.

Ganti, Tejaswini, *Bollywood A Guidebook to Popular Hindi Cinema,* Routledge Film Guidebooks, 2004. p. 50.

Gowariker, Ashutosh. (Writer & Director) *Lagaan* [Motion Picture], India, 2001.

Guha, Ranajit, *A Subaltern Studies Reader 1986-1995,* OUP, 1993. p. 11.

---. *Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India,* Duke UP, 1999. p. xi.

Nelson, Cary and Lawrence Grossberg (eds). 'Can the Subaltern Speak?' in *Marxism and the Interpretation of Culture.* Macmillan, 1988.

Rajadhyaksha, Ashish, Willemen, Paul, *Encyclopedia of Indian Cinema,* Routledge, 2012. p. 21.

Roy, Bimal. (Producer & Director) *Do Bigha Zameen* [Motion Picture], India, 1953.

Wright, Neelam Sidhar. *Bollywood and Postmodernism: Popular Indian Cinema in the 21st Century,* Edinburgh UP, 2015. p.23.

https://www-bbc-com/hindi/entertainment-49821268dated 12-03-2020

http://www-egyankosh-ac-in/handle/123456789/44799 ईकाई–25 निम्नवर्गीय प्रसंग

http://pahalpatrika-com/frontcover/getrecord/243dated 08-03-2020

https://archive-org/details/LaSortieDeLUsineLumireLyon 20-02-2020

https://www-jagran-com/entertainment/special100years&100&-years&of&hindi&cinema&N16870-html (22-02-2020)

https://www-patrika-com/miscellenous&india/film-controversy-bhakt-vidur-to-padmavati-top-10-movie-controversy-2015833/ 24-02-2020

http://www-iknow-xyz/result-php?search=15-Best-Science-Fiction---Movies-Similar-to-Rajdrohi 12-03-2020